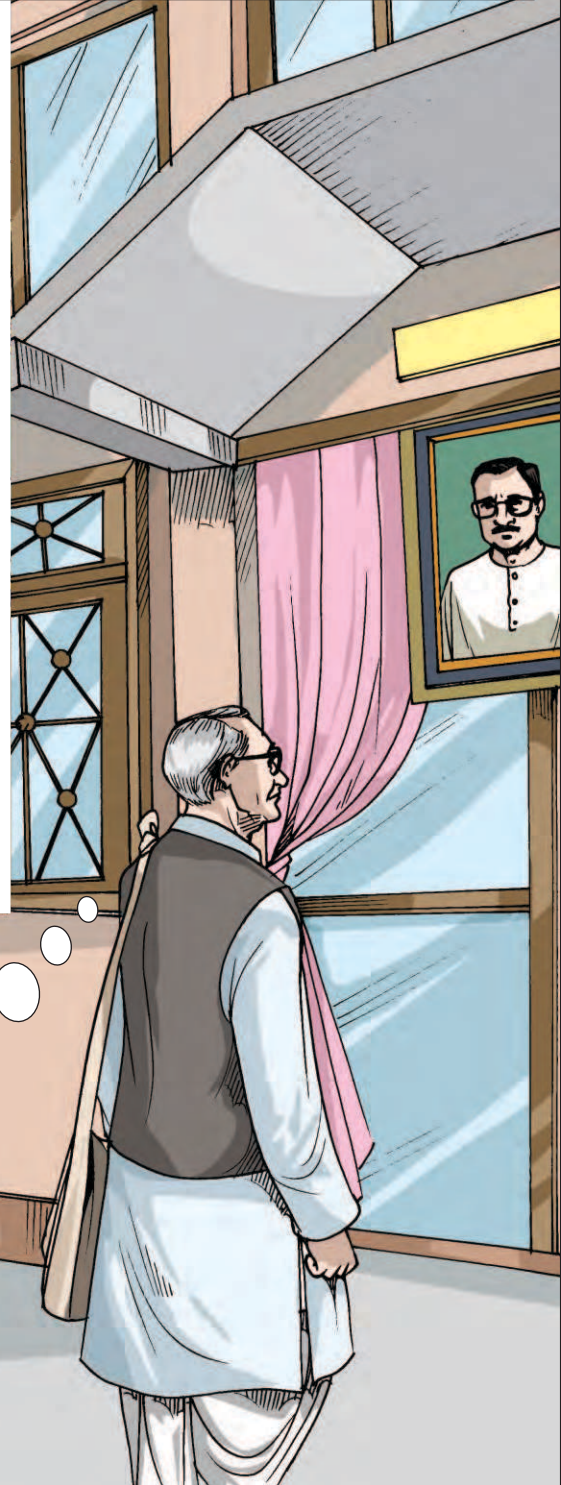


नानाजी भारी मतों से विजयी हुए। उन्हें मंत्रीपद देने की बात हुई पर उन्होंने प्रस्ताव टुकरा दिया। उनका मन राजनीति से दूर ग्रामों के विकास की ओर खिंचा जा रहा था। इस बीच उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की।



दीनदयाल जी
को नियति के क्रूर हाथों
ने हमसे छीन लिया लेकिन
उनके अन्तोदय का सपना यह
संस्थान पूरा करेगा।